दि असम वैली स्कूल

# उड़ान

युवा अभिव्यक्ति की...

वर्ष 2026

# बदलाव

मेरे जीवन में शुरुआत से ही 'बदलाव' एक ऐसा शब्द रहा है, जिससे मेरा तालमेल कभी सही नहीं बैठ पाया। चाहे वह बदलाव सकारात्मक हो या नकारात्मक, वह हमेशा मेरे भीतर एक खालीपन छोड़कर जाता था। जब भी कोई 'बुरा बदलाव' आता, मैं अक्सर खुद को उस बीते हुए समय की यादों में खोया हुआ पाती थी, जब सब कुछ स्थिर और परिचित था। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि जब कोई 'अच्छा बदलाव' आता, तो गर्व और खुशी के उन पलों के बीच भी वह खालीपन कहीं न कहीं पीछे छूट जाता था, जैसे कोई अनकही कमी रह गई हो। मैंने बरसों तक लोगों को अपनी आँखों के सामने बदलते देखा; किसी को बहुत दयालु से बहुत कठोर बनते देखा, तो किसी को बहुत धीमे से बहुत बुद्धिमान बनते देखा। मैंने देखा कि कैसे लोग अपनी कहानी के एक मामूली किरदार से अचानक मुख्य पात्र बन जाते हैं। इन तमाम बदलावों को दूसरों के जीवन में घटते देख, मैं हमेशा अपनी जिंदगी में भी एक ऐसे ही बड़े मोड़ की उम्मीद करती रही। मैं चाहती थी कि मुझमें होने वाला बदलाव इतना स्पष्ट हो कि दुनिया देखती रह जाए, लेकिन 15 साल की उम्र तक, वह बदलाव कहीं नजर नहीं आया। मैंने दूसरों की तरह बेहतर बनने की हर मुमकिन कोशिश की, लेकिन हर बार मैं असफल हुई, मैंने हार मान ली और फिर कभी वापस उठने की हिम्मत नहीं जुटाई।

यह ठहराव तब टूटा जब मैं खुद अपनी इस स्थिति से, अपनी इस स्थिरता से पूरी तरह थक गई। मुझे महसूस हुआ कि मैं कभी न बदल पाने की इस बेबसी से तंग आ चुकी हूँ। यह वह क्षण था, जब मैंने अपनी जीवन-शैली को पूरी तरह बदलने का फैसला किया। मैंने तय किया कि मैं हर संभव चीज को आजमाऊँगी, जितनी बार हो सके उतनी बार जीत हासिल करने की कोशिश करूँगी। तभी मेरे भीतर वह जज्बा पैदा हुआ जिसने मुझे यह अहसास कराया कि बदलाव आपके अपने हाथों में है। यह अहसास एक रोशनी की तरह था जिसने मुझे बताया कि बदलाव का मतलब केवल परिस्थितियों का बदलना नहीं, बल्कि खुद को उस 'कंफर्ट जोन' से बाहर खींचना है जहाँ हम सुरक्षित तो महसूस करते हैं, लेकिन विकसित नहीं हो पाते। किसी भी बुरे बदलाव को अच्छे में बदलने के लिए या जीवन में पहली बार एक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए, आपको उस घेरे को तोड़ना ही पड़ता है, जिसे आपने अपने डर के चारों ओर बनाया है।

इस सफर में सबसे बड़ी सीख यह रही कि हार मान लेना कभी कोई विकल्प नहीं हो सकता। जब हम हार मानते हैं, तो हम केवल एक काम को नहीं छोड़ते, बल्कि हम खुद को उस खालीपन के हवाले कर देते हैं जिससे हम भागना चाहते थे। गिरना स्वाभाविक है, लेकिन गिरकर न उठना ही असली असफलता है। इसके साथ ही, खुद को आगे बढ़ाने की इस दौड़ में एक और चीज़ उतनी ही महत्त्वपूर्ण है—अपनी सराहना करना। हम अक्सर खुद को और बेहतर बनाने के चक्कर में इतने कठोर हो जाते हैं कि हम अपनी छोटी-छोटी जीतों का जश्न मनाना भूल जाते हैं। खुद को धक्का देना आपको मंजिल तक पहुँचाता है, लेकिन खुद की सराहना करना आपको उस रास्ते पर चलने की हिम्मत देता है। यदि आप केवल खुद पर दबाव डालेंगे और खुद को प्यार नहीं करेंगे, तो आप जल्दी ही थक जाएँगे। आपको उस व्यक्ति का सम्मान करना होगा जिसने हार के बावजूद फिर से कोशिश करने का फैसला किया।

अंततः, बदलाव जीवन का एक अनिवार्य नियम है जिसे टाला नहीं जा सकता। लेकिन अब यह बदलाव मेरे लिए डर या खालीपन का कारण नहीं है। जब आप अपने जीवन की बागडोर खुद थाम लेते हैं, तो वह पुराना खालीपन एक ऐसी असीम संभावना में बदल जाता है जहाँ आप अपनी पसंद के रंग भर सकते हैं। अब आप अपनी जिंदगी की कहानी के दर्शक नहीं हैं, बल्कि आप उसके लेखक और मुख्य कलाकार दोनों हैं। हमेशा याद रखें कि सबसे क्रांतिकारी और सुंदर बदलाव वही है, जो आप खुद के लिए अपनी मर्जी से चुनते हैं।

**अनुश्री सिंह**
**कक्षा – बारहवीं**

# संगीत: दुनिया को जोड़ने वाला जादू

“जहाँ शब्द खत्म हो जाते हैं, वहाँ संगीत बोलता है।” संगीत कला का एक बहुत सुंदर रूप है। इसमें अलग-अलग जगहों और संस्कृतियों के लोगों को जोड़ने की ताकत होती है। अगर हमें किसी गाने की भाषा समझ न भी आए, तब भी हम उसकी धुन और ताल से उसकी भावना महसूस कर सकते हैं। संगीत हमें खुश, शांत या प्रेरित कर सकता है। बहुत से लोग दिन भर की थकान के बाद आराम करने के लिए या पढ़ाई और व्यायाम करते समय उत्साहित रहने के लिए संगीत सुनते हैं। दुनिया में संगीत के कई प्रकार होते हैं जैसे शास्त्रीय संगीत, पॉप संगीत, रॉक संगीत और के-पॉप। हर व्यक्ति की संगीत की पसंद अलग होती है। हर तरह के संगीत की अपनी खास खूबसूरती होती है। हमारी व्यस्त ज़िंदगी में संगीत एक दोस्त की तरह होता है, जो हमें सुकून देता है और खुश करता है। हम चाहे कहीं से भी हों, संगीत हमें जोड़ता है और हमारी ज़िंदगी को खुशहाल बनाता है।

अनेक खोजों के द्वारा यह पता चलता है कि संगीत अपने आप में एक औषधि का भी काम करता है। हल्के और मधुर संगीत के द्वारा रोगी के उपचार के साथ-साथ उसके पुनः स्वस्थ होने के भी अवसर काफी बढ़ जाते हैं। बारात में बजाए गए मधुर संगीत लोगों को मस्ती में झूमने के लिए मजबूर कर देता है, वहीं दूसरी ओर विदाई के समय बजने वाला संगीत लोगों के भावनात्मक जुड़ाव को आँसुओं के रूप में निकालने की क्षमता रखता है। ऐसे भी दृष्टांत नज़र आते हैं कि संगीत के द्वारा पेड़-पौधों का तेजी से विकास होता है, तो दूसरी ओर कुछ संगीत ऐसे भी होते हैं, जो जीवन को निराशा में धकेल देने की सामर्थ्य रखता है।

संगीत के सृजन और इसके महत्त्व का वर्णन हमारे वेदों और उपनिषदों में भी विद्यमान है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत ने लंबी यात्रा तय की है। क्षेत्रवार एवं समयानुसार संगीत के विविध रूप दिखाई देते हैं। मुगलकाल में भी प्रमुख संगीतकार तानसेन के विषय में कहा जाता है कि जब वे राग मल्हार गाते थे तो वर्षा होने लगती थी और जब तानसेन जी दीप राग गाते थे, तो दीप अपने आप जल उठते थे। आज भी हम संगीत को जीवन का एक अभिन्न अंग मानते हैं। संगीत मिलन, विछोह, उत्साह तथा वीरता का भाव पैदा करने में पूर्णतः समर्थ दिखाई देता है। संगीत के बिना जीवन सूना और नीरस है।

**मायरा धमीजा**
**कक्षा – छठवीं**

# शिक्षा का महत्त्व

एक छोटे से गाँव में राधा नाम की एक लड़की रहती थी। उसका घर खेतों और पेड़ों से घिरा हुआ था। हर सुबह वह अपने स्कूल की ओर निकल पड़ती, जहाँ तक पहुँचने के लिए उसे कच्ची सड़क और नदी का पुल पार करना पड़ता था।

राधा पढ़ाई में बहुत होशियार थी। गाँव के लोग अक्सर कहते, “यह लड़की एक दिन बड़ा काम करेगी।” लेकिन उसके सामने चुनौतियाँ भी थीं-कभी किताबें कम पड़ जातीं, कभी स्कूल जाने के लिए बारिश और कीचड़ से जूझना पड़ता।

फिर भी राधा ने हार नहीं मानी। उसने मेहनत से पढ़ाई की, अच्छे अंक प्राप्त किए और आगे चलकर शहर के कॉलेज में दाखिला लिया। वहाँ उसने शिक्षा के महत्त्व को और अधिक गहराई से समझा।

कुछ वर्षों बाद, राधा अपने गाँव लौटी। अब वह एक शिक्षिका बन चुकी थी। गाँव के बच्चों को पढ़ाना उसका सपना था। वह स्कूल में नई किताबें लाई, बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाया और लड़कियों को खास तौर पर पढ़ाई के लिए प्रेरित किया।

धीरे-धीरे गाँव बदलने लगा। जहाँ पहले बच्चे स्कूल छोड़ देते थे, अब वे उत्साह से पढ़ने आने लगे। राधा ने साबित कर दिया कि शिक्षा से न केवल जीवन बदलता है, बल्कि पूरे समाज की दिशा भी बदल सकती है।

**ऊर्जा जैन**
**कक्षा – दसवीं**

# भेदभाव : एक अभिशाप

गाँव के स्कूल में दो बच्चे पढ़ते थे – रवि और सलीम। दोनों ही पढ़ाई में तेज थे, लेकिन रवि को अक्सर शिक्षक और साथी बच्चे आगे बढ़ने के अवसर देते, जबकि सलीम को उसके धर्म और परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण पीछे रखा जाता।

एक दिन स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी हुई। रवि और सलीम ने मिलकर एक मॉडल बनाया, लेकिन जब पुरस्कार देने की बारी आई तो केवल रवि का नाम लिया गया। सलीम चुपचाप खड़ा रहा। उसके चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। रवि ने देखा कि सलीम की मेहनत को अनदेखा किया गया है। उसने मंच पर जाकर कहा, “यह मॉडल मैंने अकेले नहीं बनाया। सलीम ने बराबर मेहनत की है। अगर उसे सम्मान नहीं मिलेगा तो यह पुरस्कार मेरे लिए बेकार है।”

शिक्षक और प्रधानाचार्य चौंक गए। उन्होंने तुरंत सलीम को भी बुलाया और दोनों को संयुक्त रूप से विजेता घोषित किया। उस दिन बच्चों ने सीखा कि असली जीत तब होती है जब सबको बराबरी का हक मिले।

गाँव में यह घटना चर्चा का विषय बन गई। लोगों ने समझा कि भेदभाव केवल दुख और अन्याय लाता है। जब हम सबको समान अवसर देते हैं, तभी समाज आगे बढ़ता है।

**अनन्या यादव**
**कक्षा – दसवीं**

# प्रेम की महिमा

हर शब्दकोश में प्रेम का अर्थ केवल अत्यधिक पसंद या लगाव बताया जाता है, परंतु मेरे विचार से वास्तविक और सच्चे अर्थों में प्रेम लगभग अपरिभाषित है, और कभी-कभी यह व्यक्तिनिष्ठ भी होता है। बहुत बार मनुष्य प्रेम को आसक्ति, आकर्षण या अनावश्यक जुनून के साथ भ्रमित कर देते हैं, और इसी कारण समाज अक्सर इसकी आलोचना करता है। इस भावना को अक्सर ध्यान भटकाने वाला या विनाशकारी माना जाता है, लेकिन वास्तव में यही वह शक्ति है जो दुनिया में मौजूद अधिकांश समस्याओं का समाधान कर सकती है।

हम इसे तब समझते हैं जब कलाकार जैसे एल्विस प्रेस्ली अपने गीत “कैन्ट हेल्प फॉलिंग इन लव”, जो २१ नवम्बर १९६१ को प्रकाशित हुआ था, में कहते हैं, “वाइज मेन से ओनली फूल्स रश इन” और “शैल आई स्टे? वुड इट बी अ सिन?” यहाँ वे स्नेह की ही बात कर रहे हैं। वे संकेत देते हैं कि किसी से प्रेम करना अक्सर मूर्खता या पाप कहा जाता है, और इसलिए वे संकोच महसूस करते हैं। यहाँ हम मनुष्यों की विडंबना भी देखते हैं। एक ओर समाज स्नेह की निंदा करता है, और दूसरी ओर युद्ध तथा घृणापूर्ण राष्ट्रवाद को सुरक्षा का एकमात्र समाधान बनाकर प्रस्तुत करता है।

मेरा मानना है कि समाज अक्सर स्नेह के वास्तविक अर्थ को लेकर भ्रमित रहता है। कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि यह केवल एक रोमांटिक साथी के प्रति ही व्यक्त किया जा सकता है, जबकि यह किसी भी अस्तित्व तक फैल सकता है, चाहे वह मौजूद हो या न हो। दूसरी ओर, कैलाश खेर का गीत “सैयाँ” गाता है, “तुझे जीत जीत हारूँ, ये प्राण प्राण वारूँ, तेरी आरती उतारूँ”, जो यह दर्शाता है कि गायक अपने प्रिय के लिए बार बार जीत को त्याग देता है और उसकी आरती उतारता है। आरती भक्ति, स्नेह और सम्मान का प्रतीक है, और यह गीत इस भावना की सच्ची भक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति को सुंदर रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रेम देखभाल, समझ, निस्वार्थता, धैर्य और सबसे महत्वपूर्ण सम्मान का मिश्रण है। यह वह भावना है जिसमें हम अपनी सुविधा से ऊपर उस व्यक्ति या वस्तु को रखते हैं जिसे हम महत्व देते हैं। कभी कभी मुझे लगता है कि यह भावना मनुष्यों में धीरे धीरे कम होती जा रही है, और इसी कारण उदासीनता समाज में एक स्थायी समस्या बनती जा रही है। इसी वजह से कोई दुर्घटना लोगों के लिए केवल दृश्य या प्रसिद्धि पाने का अवसर बन जाती है, एक बीमार माँ को उसका अज्ञानी पुत्र अकेला छोड़ देता है, और तलाक की घटनाएँ भी बढ़ती दिखाई देती हैं।

युवावस्था के आरंभ में ही किशोरों की आलोचना की जाती है यदि उनके रोमांटिक संबंध हों, क्योंकि इसे ध्यान भटकाने वाला माना जाता है, और केवल पढ़ाई पर ध्यान देना सराहा जाता है। परंतु मेरा मानना है कि स्नेह को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और मनुष्यों को यह सिखाया जाना चाहिए कि जीवन केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है। इसका उपहास करने के बजाय इस भावना की परिभाषा को सही किया जाना चाहिए। जो लोग करुणा और सच्चे भावों के साथ कुछ करने की इच्छा रखते हैं, उन्हें मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए और वास्तविक मानवीय भावनाओं के बारे में सिखाया जाना चाहिए।

अक्सर वयस्क बच्चों से कहते हैं कि किशोर प्रेम करना नहीं जानते, लेकिन मेरा मानना है कि कई बार मनुष्य ही सच्चे स्नेह को व्यक्त करना नहीं जानते। यदि हम एक समाज के रूप में मानवीय भावनाओं के वास्तविक स्वरूप को समझने और उन्हें अपनाने का प्रयास करें, तो समाज और अधिक विकसित हो सकता है। चाहे यह भावना माता पिता से शुरू हो, बहन से, या किसी रोमांटिक साथी से इसे आलोचना या उपहास का विषय बनाने के बजाय सही दिशा दी जानी चाहिए, क्योंकि सच्ची देखभाल हमेशा विकास का कारण बनती है।

इस भावना का सबसे सच्चा उदाहरण शिव और पार्वती की कथा है। पार्वती और शिव दोनों ने प्रतीक्षा की, एक दूसरे के लिए तड़पे और अंततः एक दिव्य मिलन में फिर से साथ आए, जो पूरे ब्रह्मांड के संतुलन के लिए आवश्यक था। इसी प्रकार मनुष्यों को भी स्नेह को एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। अपने विकास के लिए और संसार की सहायता के लिए।

एक ऐसे संसार में जहाँ घृणा बढ़ती दिखाई देती है और युद्ध जीवन का एक सामान्य हिस्सा बनते जा रहे हैं, वहाँ करुणा सभी प्राणियों के लिए समाधान बन सकती है। मेरा मानना है कि यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि मानवीय भावनाओं को छिपाया, दबाया या घुटने नहीं दिया जाना चाहिए; बल्कि उन्हें खुले रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। स्नेह की सराहना की जानी चाहिए और जिज्ञासा को दबाने के बजाय स्वीकार किया जाना चाहिए। अनुशासन के नाम पर किसी भावना को दबाने के बजाय उसे जिज्ञासा के साथ समझने का प्रयास करना चाहिए। यही वह स्थान है जहाँ वास्तविक विकास प्रारंभ होता है, और जहाँ से एक देखभाल पूर्ण समुदाय का निर्माण संभव होता है।

**पहल बजाज**
**कक्षा- बारहवीं**

# सच्चाई और बेईमानी

एक छोटे से गाँव में रघु और मोहन नाम के दो दोस्त रहते थे। दोनों बचपन से साथ पढ़ते थे, लेकिन उनके स्वभाव बिल्कुल अलग थे। रघु हमेशा सच्चाई और ईमानदारी का रास्ता अपनाता था, जबकि मोहन अक्सर काम निकालने के लिए बेईमानी कर लेता था। एक दिन दोनों को रास्ते में एक पैसों से भरा बटुआ मिला। मोहन ने जल्दी से बटुआ उठाया और बोला, “रघु, इसमें तो बहुत पैसे हैं। चलो इसे आपस में बाँट लेते हैं। किसे पता चलेगा?” रघु ने शांत स्वर में कहा, “नहीं मोहन, यह हमारा नहीं है। जिस किसी का भी है, वह जरूर परेशान होगा। हमें इसे उसके मालिक तक पहुँचाना चाहिए।”

मोहन को रघु की बात पसंद नहीं आई, लेकिन वह चुप रहा। दोनों गाँव की चौपाल की ओर चल पड़े ताकि किसी को इसके बारे में बता सकें। रास्ते में उन्हें एक बुजुर्ग व्यक्ति घबराए हुए मिले। वे बार-बार अपनी जेबें टटोल रहे थे। रघु ने उनसे पूछा, “बाबा, क्या आप कुछ ढूँढ रहे हैं?”

बुजुर्ग ने दुखी होकर कहा, “बेटा, मेरा बटुआ कहीं गिर गया है। उसमें मेरी मेहनत की कमाई थी।” रघु ने तुरंत बटुआ निकालकर उन्हें दे दिया। बुजुर्ग की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। उन्होंने रघु को आशीर्वाद दिया और कहा, “बेटा, सच्चाई का रास्ता कठिन जरूर होता है, पर अंत में वही इंसान को सम्मान दिलाता है।”

यह सब देखकर मोहन को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने रघु से कहा, “आज मुझे समझ में आ गया कि थोड़े से लाभ के लिए बेईमानी करना गलत है।” उस दिन के बाद मोहन ने भी हमेशा सच्चाई का साथ देने का संकल्प लिया।

**शांभवी चौहान**
**कक्षा- बारहवीं**

# ममता

माँ दुनिया का एक ऐसा मूल्य और प्यारा शब्द है जिसका हम किसी तरह से मूल्यांकन नहीं कर सकते। माँ ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है। माँ को ऐसे ही ममता की मूरत नहीं कहा जाता है, उनका दिल अपने बच्चों के लिए हमेशा ममता से भरा रहता है।

आजकल जैसे-जैसे हम सब बड़े हो रहे हैं, वैसे-वैसे हम सब अपने परिवार वालों से दूर होते जा रहे हैं। कभी-कभी हम अपना गुस्सा अपने परिवार वालों पर निकालते हैं और सबसे ज्यादा माँ इसकी शिकार हो जाती है। जिसने हमें जन्म दिया, हमारे लिए पूरी दुनिया से लड़ गई , हमें स्नेह से पाला और हमारी सभी इच्छाएँ पूरी की। उसने न जाने हमारे लिए कितना कुछ सहा फिर भी हम उसके ऊपर ही सारी गलतियों का बोझ डाल देते हैं । वह इतनी दरिया दिल होती है कि हमारी गलतियों पर माफ़ी माँगने पर तुरंत हमें माफ़ कर देती है, चाहे हम माफ़ी दिल से माँगें या फिर बाहर से, वह हमेशा माफ़ ही करती है। हम सब उसके भोलेपन का फ़ायदा उठाकर बार-बार गलतियाँ करते रहते हैं और उसका दिल तोड़ते रहते हैं क्योंकि हमें बहुत अच्छे से पता है कि वह हमारी सारी गलतियों को तो माफ़ ही कर देगी। उनका तो बस अपने बच्चों के प्रति यही धर्म है कि वह हमेशा उन्हें माफ़ करती रहे।

एक माँ के लिए उसके बच्चे ही सब कुछ होते हैं। कुछ बच्चे इस बात को समझते हैं और हमेशा उसकी इज्ज़त करते हैं और कुछ उसकी कोई परवाह नहीं करते। जीवन में सभी हमारा साथ छोड़ देते हैं, यहाँ तक कि अच्छे से अच्छा दोस्त भी साथ छोड़ देते हैं परंतु माँ एक ऐसा संबंध है जो कि कभी भी अपने बच्चे का साथ नहीं छोड़ती। इसका उदाहरण हम पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं से ले सकते हैं। एक चिड़िया हर तरह से अपने सभी छोटे-छोटे बच्चों का ध्यान रखती है। वह उसके लिए भोजन की व्यवस्था पहले करती है और खुद बाद में खाती है। उसी तरह से हाथी और अन्य जानवर भी अपने बच्चों के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और हमें उनसे सीखना चाहिए। ये सभी जीव-जन्तु अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं। वास्तव में माँ की ममता अपने बच्चों के लिए हमेशा एक जैसी ही होती है चाहे वह कोई जानवर हो या फिर कोई इंसान। एक माँ ही किसी परिवार का आधार होती है और माँ के बिना सब कुछ अधूरा है। अगर हमें कोई ज्वर भी हो जाता है तो माँ हमारी बहुत अच्छे से देखभाल करती है और हमारी सेवा में लग जाती है। वह हमारे सिरहाने बैठकर हमें सहलाती है और हमें पुचकारती है। इन सबके बदले में माँ को कुछ भी नहीं चाहिए। वह निःस्वार्थ भाव से हमारी सेवा करती है। जो प्यार उसने हमें दिया है, उसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

हम अपने जीवन में चाहे कितने ही बड़े ही क्यों न हो जाएँ हमें हमेशा अपनी माँ के प्रति कर्त्तव्य और जिम्मेदारियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। हम माने या न माने परंतु हमारी जीत में ही उनकी जीत है और हमारी हार में ही उनकी हार है। अगर हम कुछ गलत करते हैं, तो सभी हमारी माँ पर ही उँगली उठाते हैं और कहते हैं कि माँ ने कैसे संस्कार दिये हैं। हमें अपने कर्मों से माँ को शर्मसार नहीं करना है, बल्कि अपने सत्कर्मों से उनका नाम उजागर करना है। हमें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे कि माँ का नाम खराब हो। यही माँ के लिए सच्ची श्रद्धा होगी।

**अद्विका अग्रवाल**
**कक्षा - दसवीं**

# ईरान संकट

मानव की अति महत्वाकांक्षा ने आज विश्व को युद्ध के कगार पर ला दिया है। ईरान-अमेरिका संघर्ष अब केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें कई अन्य राष्ट्र भी शामिल हो गए हैं। इसकी जड़ें 1979 की ईरानी इस्लामी क्रांति में हैं, जब ईरान ने शाह मोहम्मद रजा को हटाकर इस्लामी गणराज्य की स्थापना की और पश्चिमी प्रभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। इसी से अमेरिका और ईरान के बीच गठबंधन टूट गया। इसके बाद बंधक संकट और ईरान-इराक युद्ध में अमेरिका द्वारा इराक को समर्थन देने से दोनों देशों के बीच तनाव और बढ़ गया।

ईरान ने साम्राज्यवादी शासन से मुक्त होकर पड़ोसी देशों को भी विदेशी दमन के खिलाफ प्रेरित किया। अमेरिका ने ईरान को आतंकवाद से जोड़कर उसकी छवि खराब की। कूटनीतिक प्रयास असफल रहे और इजराइल ने परमाणु हथियारों के खतरे से बचाव के नाम पर कदम उठाए। वर्तमान में ईरान रूस और चीन जैसे सहयोगी बना चुका है और खाड़ी क्षेत्र में मिसाइल हमले कर रहा है। अमेरिका और इजराइल इसे आत्मरक्षा बताते हैं, जबकि ईरान इन आरोपों को झूठा मानता है।

इस संघर्ष का असर वैश्विक व्यापार पर गहरा पड़ा है। होर्मुज जलडमरूमध्य, जो विश्व व्यापार का महत्त्वपूर्ण मार्ग है, बंद हो गया है। इससे तेल और अन्य संसाधनों की कीमतें बढ़ गई हैं। मध्य पूर्व का हवाई क्षेत्र असुरक्षित होने से उड़ानें निलंबित हैं, जिससे यात्रा और व्यापार दोनों प्रभावित हुए हैं।

भारत में भी इसका असर दिख रहा है। एलपीजी गैस की आपूर्ति बाधित होने से दुकानों को बंद करना पड़ रहा है। मुद्रास्फीति बढ़ रही है और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों पर संकट गहराता जा रहा है। खाद्य निर्यात भी प्रभावित है, जिससे संसाधनों की कमी और बढ़ सकती है।

ईरान-अमेरिका-इजराइल युद्ध केवल सैन्य संघर्ष नहीं है, बल्कि इसका असर निर्दोष देशों और नागरिकों पर भी पड़ रहा है। यह वैश्विक शांति और संसाधनों के लिए गंभीर खतरा है, और दशकों पुराने टूटे सहयोग का परिणाम आज पूरी दुनिया भुगत रही है। इस युद्ध के दौरान केवल ईरान, अमेरिका और इजरायल ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देश इसका दुष्परिणाम भोग रहे हैं।

भारत भी विस्तृत विश्व का  एक अंग होने के  कारण आज इस युद्ध के दुष्परिणामों से अछूता नहीं है। भारत में धीरे-धीरे इस युद्ध का प्रभाव दिखाई दे रहा है। हमारे देश में आरक्षित पेट्रोलियम पदार्थों के भंडार में कमी आने लगी है जिसके कारण लोगों में तनाव एवं आक्रोश भरा दिखाई दे रहा है। हमारे देश की सरकार भी इस समस्या को ध्यान में रखते हुए हर तरह से पेट्रोलियम पदार्थों का संचय करने और आमलोगों तक इसकी कमी न आने के लिए अपना भरपूर प्रयास कर रही है। आज विश्व में शांति की आवश्यकता है। आजकल युद्ध, विश्व के विनाश और समस्याओं के कारण बन सकते हैं। अतः सभी देशों को आज बुद्धिमत्ता से काम लेने की आवश्यकता है।

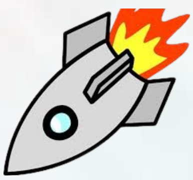

**आनवी घोष**
**कक्षा- दसवीं**

# ज़िम्मेदारी

छोटे से भीड़-भाड़ वाले शहर खेलमाटी में युसूफ नाम का एक बढ़ई रहता था। उसके बारे में दो बातें सब जानते थे – काम में सफाई, और चुपचाप गंभीर स्वभाव। जीवन के बारे में उसका ख्याल यह था कि ज़िम्मेदारी ही सब कुछ है। अगर किसी ने वादा किया, तो फिर उसे निभाना अनिवार्य है, ऐसा उसका मानना था। काम एक बार शुरू हुआ, तो फिर पूरा होकर रहेगा – झटपट नहीं, बल्कि धीरे-धीरे, पर बिल्कुल सही। कोई तय तारीख टली नहीं, कभी घरवालों को किसी चीज़ की कमी नहीं आई।

ठंड से काँपती दीवारों में युसूफ की कार्यशाला खड़ी थी। उधर, अली - उसका चेला - हर पल डरा-डरा रहता, गलती के भय से सिकुड़कर। उसे मज़दूरी अच्छी मिलती थी, औज़ार भी अच्छी तरह से काम करते थे। युसूफ अपने फ़र्ज़ को बहुत अच्छी तरह से अंजाम देता था। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि किसी ने कभी भी उसके लिए तारीफ़ का एक शब्द भी नहीं निकाला और न कभी किसी ने उसे तनाव में टूटते हुए देखा।

बारिश की धीमी-धीमी छपछप में, एक झुर्रीदार हथेलियों वाली बूढ़ी महिला, उसकी दुकान के अंदर घुसी। उसकी मुट्ठी में लकड़ी का टूटा पलंग था - उसके पोते के खेलने का अंतिम सबूत। पैसे के बजाय, आँखों में डूबे आँसू लेकर उसने युसूफ के सामने हाथ फैला दिए।

सुबह होने तक तीन बड़े ऑर्डर तैयार करने थे युसूफ के लिए। उसने अपने हिसाब के रजिस्टर में भरे हुए पन्ने देखे। पैसा देने वाले ग्राहकों के साथ-साथ घरवालों का भी उस पर भरोसा था। इसलिए उसने सीधे कह दिया - खैरात के चक्कर में आज वक्त नहीं निकाल सकता, ज़िम्मेदारियाँ निभानी हैं।

उस औरत के पैर हल्के-हल्के बढ़ रहे थे, सिर नीचे। अली की नज़र पड़ी - आँखों में पानी था। फिर क्या था, छाती में कुछ टटोलने लगा, जैसे कोई घाव धीमे से दब गया हो। अगली सुबह तक अली वही टिका रहा, युसूफ के घर जाने के बाद। पूरी रात खड़े-खड़े काम चलता रहा, आराम के पलों को पालना जोड़ने में डाल दिया। काम इसलिए हुआ नहीं कि कोई दबाव था, बल्कि उस औरत के दर्द को समझने की वजह से।

अगली सुबह युसूफ जल्दी पहुँचा। अली अपने काम करने की जगह पर ही सो गया था, उसके पास वह चमकदार पालना पड़ा था। पहले तो गुस्सा आया युसूफ को - सफाई की ड्यूटी छोड़कर अली ऐसे क्यों सो गया परंतु पालने को देखकर उसे सब कुछ समझते देर नहीं लगी।

अचानक युसूफ के हाथ पालने की चिकनी लकड़ी से टकराए। तभी उसकी नज़र अली के नोट पर पड़ी। वह छोटा-सा कागज़ बस इतना कहता था—इसे उस रूह के लिए, जिसे सुकून चाहिए।

अचानक युसूफ के भीतर कुछ हिल गया। एहसास हुआ - बरसों से वह ज़िम्मेदार तो था, पर आत्मा में सूनापन छा गया था। उसके कंधों पर कर्त्तव्यों का बोझ टिका था, फिर भी दर्द को महसूस करने की शक्ति घटने लगी थी। ताकत थी, हाँ, पर उस तक पहुँच खो चुका था, जो दुख को सुनता है।

अचानक उसने अली को छुआ, डाँटने के बजाय। हाथ कंधे पर रखा। "तुमने वह काम किया," युसूफ ने साफ़ आवाज़ में कहा, "मैं अपनी 'ज़िम्मेदारी' में भूल चुका था।" बिना एहसास के ज़िम्मेदारी ऐसे चलती है जैसे कोई मशीन। ठंडी, सटीक, पर धड़कन से दूर। अगर ज़िम्मेदारी न हो, तो एहसास भी बेकार नज़र आता है। हवा में तैरता रहता है, कभी जमीन नहीं छूता।

एक दिन के बाद सब कुछ अलग हो गया यूसुफ की मरम्मत की दुकान में। वह फिर भी सभी समय पर काम पूरा करता है, पर अब लोगों की आवाज़ सुनने लगा है। उसने ज़िम्मेदारी नहीं खोई, साथ में दिल भी दिखाने लगा।

**करन सोमानी**
**कक्षा- बारहवीं**

# डांसिंग मिसाइल

अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच जारी संघर्ष में ईरान की सेजिल मिसाइल आजकल दुनिया भर में "डांसिंग मिसाइल" के नाम से चर्चित है। इसकी अनोखी तकनीक और हवा में किए जाने वाले पैंतरों ने इसे खास बना दिया है। सामान्य मिसाइलें सीधी रेखा में उड़ती हैं, जिनका मार्ग आसानी से अनुमानित किया जा सकता है। लेकिन सेजिल इस नियम को तोड़ती है—यह तेज़ रफ्तार में भी दिशा बदल सकती है और बीच आसमान में घूमते हुए ऐसे लगती है मानो नृत्य कर रही हो।

इस मिसाइल की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह हवा में अचानक मोड़ ले सकती है। इसके छोटे पंख और इंजन इसे अंतरिक्ष से धरती की ओर लौटते समय भी दिशा बदलने में सक्षम बनाते हैं। यही वजह है कि दुश्मन देशों के कंप्यूटर सिस्टम इसके अगले कदम का अनुमान नहीं लगा पाते। इसकी चालाकी और अप्रत्याशित गति ने बड़े-बड़े राष्ट्रों को चिंतित कर दिया है।

सेजिल ठोस ईंधन पर आधारित है, जिससे इसे लंबे समय तक तैयार रखा जा सकता है और मोबाइल ट्रक से तुरंत लॉन्च किया जा सकता है। लगभग 2,000 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली यह मिसाइल आधुनिक सुरक्षा कवचों को चकमा देने में सक्षम है। इसकी लागत अपेक्षाकृत कम है, जबकि इसे रोकने के लिए अमेरिका और इज़राइल को अत्यधिक महंगी मिसाइलें दागनी पड़ती हैं।

ईरान ने इस मिसाइल के प्रयोग से अपने विरोधियों को भारी नुकसान पहुँचाया है। युद्ध के परिणामों को देखकर अमेरिका भी सोचने पर मजबूर हो गया है कि ईरान पर हमला करना उसकी रणनीतिक भूल थी। यह संघर्ष यह संकेत देता है कि भविष्य के युद्ध मिसाइलों और ड्रोन तकनीक पर आधारित होंगे, जहाँ कम खर्च में अधिक प्रभाव डाला जा सकेगा।

आज के दौर में युद्ध केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित करते हैं। इसलिए समस्याओं का समाधान कूटनीति और संवाद से करना ही मानवता और विश्व शांति के लिए सबसे उचित मार्ग है। युद्ध हमेशा विनाश लाते हैं, निर्माण नहीं। इसीलिए युद्धों की रोकथाम ही मानव विकास और स्थायी शांति की कुँजी है।

**प्रयाश खाखोलिया**
**कक्षा- बारहवीं**

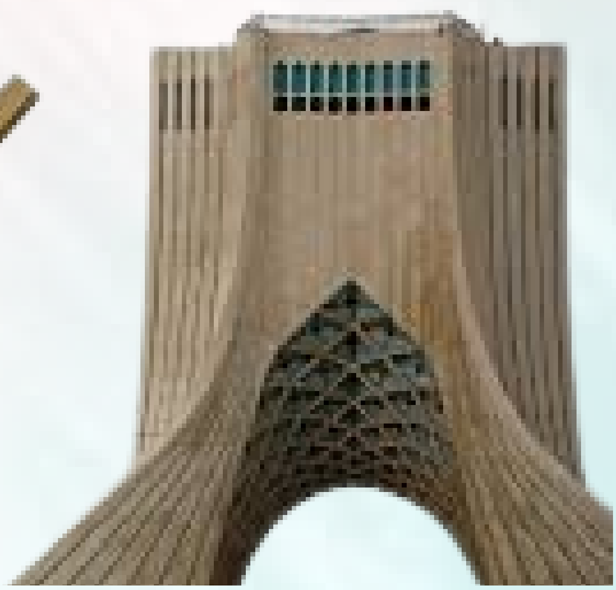

# रास्ता खोजिए

## सरिता को किसी एक रास्ते से उसके घर तक पहुँचने में मदद कीजिए:

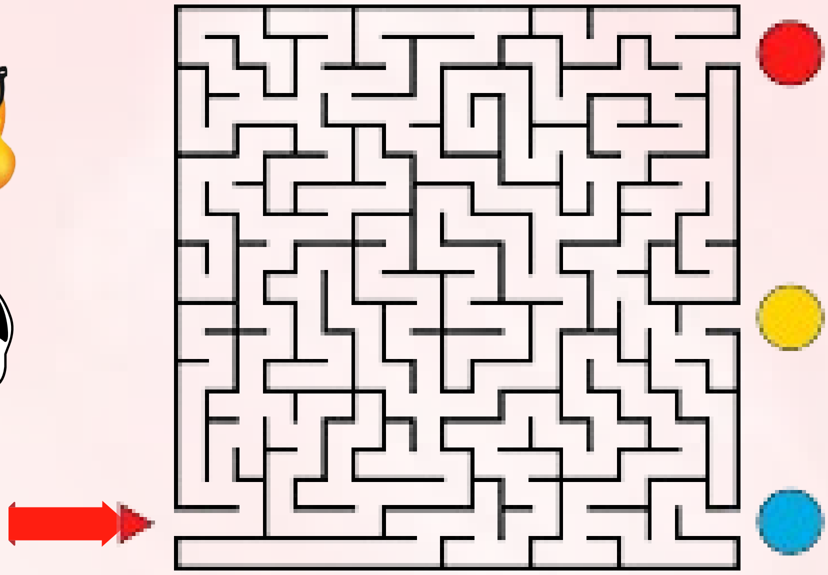

## क्या आप जानते हैं ?

- भारत का नाम "इंडिया" इंडस नदी से पड़ा।
- शतरंज के खेल की उत्पत्ति भारत में ही हुई।
- बीजगणित, त्रिकोणमिति और कैलकुलस की पढ़ाई सबसे पहले भारत में शुरू हुई थी।
- वाराणसी (बनारस) गंगा नदी के किनारे बसा है और इसे दुनिया का सबसे पुराना निरंतर आबाद शहर माना जाता है।
- भारत में दुनिया के किसी भी देश से अधिक डाकघर हैं। श्रीनगर की डल झील में तो पानी पर तैरता हुआ पोस्ट ऑफिस भी है।
- जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर बना पुल एफिल टॉवर से भी लगभग 35 मीटर ऊँचा है।
- गोरखपुर जंक्शन का प्लेटफॉर्म 1,366.33 मीटर लंबा है, जो दुनिया का सबसे लंबा रेलवे प्लेटफॉर्म है।

-साभार गूगल
शांभवी चौहान
कक्षा -दसवीं

# परीक्षा का भय

**अर्पित यादव**
**कक्षा - सातवीं**

बड़े दिनों के बाद
परीक्षा का दिन आया,
सोच के अपनी हालत
मेरा मन घबराया।

पापा की मुस्कान
बदलती देखी मैंने,
अरमानों के बोझ तले
खुद को ही पाया।
अध्यापक की डाँट नहीं
हड़ती है मुझको,
पापा के डण्डों ने
मेरा होश उड़ाया।
पिछली बार मेरे
अंकों के कारण,
पापा ने मुझको
जमकर हड़काया।
कहा, घूमता रहता है
दिन-भर तू बाहर,
उन्होंने मेरे खेलकूद पर बैन लगाया।

मेरी प़ॉकेट मनी काट दी
पॉकेट फाड़ी,
अपनी मीठी वाणी से
सम्मान बढ़ाया।
खेल समय का काट
मुझे हर समय पढ़ाया,
पर मैं मूरख, त्याग को उनके
समझ न पाया।
मुझको ऐसा लगा
इन्होंने मेरा बचपन,
अपने अरमानों की खातिर
बलि चढ़ाया।

डरता हूँ मैं बहुत
परीक्षा के आने से,
नींद मेरी गायब होती है
भय खाने से।
मैथ का पेपर देख
सभी के सिगनल उड़ते,
कैमिस्ट्री को देख
सभी के छक्के छुटते।
पर पापा की दुआ
हमेशा साथ में रहती,
उनकी पाबंदी ,
मुझको अनुशासित रखती।
रट्टू तोता बनकर
मैं कोशिश करता हूँ,
पापा की ख्वाहिश को
मैं पूरा करता हूँ।
मित्रों मेरी बात मान लो
रोज पढ़ो तुम,
मेहनत की सीढ़ी पर
दौड़ चढ़ो तुम।
अगर आज तुम सबसे पीछे
रह जाओगे,
जीवन में तुम सोच-सोचकर
पछताओगे।
अभी समय है
कक्षा में सोना छोड़ो तुम,
रोज प्रेप को करो
नकल करना छोड़ो तुम।
अगर मेरी इस सीख को
तुम अपना पाओगे,
मेरी तरह से प्यार
सभी का पा जाओगे।

## घर से दूर

कृति मिंदा
कक्षा - बारहवीं

माँ – बाप से दूर किया सफ़र
नए शहर की राह पकड़ी ,
अनजानी दुनिया में कदम बढ़ाया
अपने आप को ही सहारा बनाया।

अकेलेपन में रात को आँसू निकल आए
घर की याद छिप-छिपकर मैंने आँसू बहाए
दोस्त मिले, यार मिले, मिला सबका प्यार
तन्हाई में न भूल पाया अपना घर-संसार।

धीरे-धीरे टूटने लगा अकेलेपन का पहर
स्कूल बना नया घर, पढ़ाई बनी अब नई डगर,
सब-कुछ था पास, माँ-बाप की आती थी याद मगर
कर लिया मैंने फ़ैसला अब से चलूँगी अपनी नई डगर।

अकेले सामना करना पड़ा मुश्किलों का
पर निकली कामयाबी की नई राहें,
बचपन का सफर ऐसे बीता
फिर कामयाबी ने पकड़ ली बाहें ।

## छोटा-सा सफर

उन्नति अग्रवाल
कक्षा -दसवीं

चलो चलें एक राह पर,
बिना डरे, बिना फिकर।
कभी धूप मिलेगी, कभी छाँव,
बढ़ते रहेंगे हमारे पाँव।

रास्ता थोड़ा टेढ़ा है,
पर ये खेल बड़ा सुनहरा है।
गिरेंगे तो फिर उठ जाएंगे,
हँसते-हँसते बढ़ते जाएंगे।

मंज़िल की न फिकर करो,
बस इस पल में जिया करो।
जिंदगी एक प्यारा-सा गीत है,
बस चलते रहना ही जीत है।

ज़िंदगी भी एक राह है,
इस पर नहीं ठहराव है।
मेहनत ही अपना धर्म है,
बस कर्म अपना कर्म है।

चलता रहा वह सफल है,
आलसी सदा असफल है।
जीवन में उसकी शान है,
कर्मों से जो भी महान है।

## खुद पर भरोसा

**अनुष्का अय्यर**
**कक्षा - आठवीं**

जीवन एक चौराहा है,
हर मोड़ पर एक सवाल है।
रास्ते में ही छिपा हुआ,
हर सवाल का एक ज़वाब है।
एक रास्ता इधर जाता है,
दूसरा दूसरी ओर जाता है।
हर एक रास्ता, हर इंसान को,
कुछ न कुछ, सिखा ही जाता है।
कभी हम जोश में चलते हैं,
कभी हम डर कर रूकते हैं।
हमारे आज के फैसले ही,
हमारी किस्मत बदलते हैं।
रास्ते पर आगे बढ़कर ही,
हम मंजिल की ओर चल पाएंगे।
गलत होने पर सीख मिलेगी,
सही होने पर हमें जीत मिलेगी।
कल की फिक्र में आज को मत भुलाना,
अपने पर तुम कर भरोसा बढ़ते जाना।
खुद पर भरोसा रखकर ही सब पा सकोगे,
तोड़कर तारे गगन से ला सकोगे।
जीतने पर सब तरफ सम्मान होगा,
भागने पर युद्ध से अपमान होगा।
लक्ष्य से अपने कभी तुम मत भटकना,
व्यर्थ की बातों में मत तुम सिर पटकना।

## विश्वास कर

**अनिल कुमार यादव**
**हिंदी विभाग**

विश्वास कर अपने करम पर,
चल निरंतर कर्म पथ पर।
साथ सबका मिल सके,
जीवन तभी होगा मनोहर।
व्यर्थ की बातें तुझे उलझा रखेंगी,
राह की आसक्तियाँ भटका सकेंगी।
लक्ष्य पर अपना निशाना साध रख तू,
कर्म पर अपने भरोसा आप रख तू।
जो नहीं सुनते समय की आहटों को,
भटक जाते हैं, वही इन रास्तों को।
ध्यान पूरा साध कर संधान कर ले,
जो मिला है, आज अवसर साध्य कर ले।
मैं निरंतर ढूँढता हूँ साथियों को,
प्यार का पैगाम लाती वादियों को।
पर मुझे पूरा भरोसा भाग्य पर भी,
कष्ट में तुम साथ दोगे आप पर भी।
दिल हमेशा सच की खातिर डोलता है,
भाग्य में जो भी लिखा, वह खोजता है।
पर कभी न भाग्य पर ही खेलता हूँ,
कर्म पर विश्वास रख सब ठेलता हूँ।
मैं हमेशा सच को लेकर साथ चलता,
किसी के डर से नहीं मैं रंग बदलता।
मुझे है पूरा भरोसा, सब मिलेगा,
सच के दम पर ही सभी को रब मिलेगा।

## उत्तर-पूर्व भारत के रोचक तथ्य

**एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव : मावलिननोंग गाँव को एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव माना जाता है।**

**दुनिया में सबसे अधिक वर्षा : मौसिनराम पृथ्वी का सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान है।**

**एक सींग वाला गेंडा : काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में दुर्लभ एक सींग वाले गेंडे पाए जाते हैं।**

**प्रसिद्ध हॉर्नबिल उत्सव : हॉर्नबिल महोत्सव यहाँ की संस्कृति, नृत्य और परंपराओं को दर्शाता है।**

**तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान : केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है।**

# अंतर खोजिए

## नीचे दिखाए गए चित्रों में अंतर खोजिए:

## बूझो तो जानें ?

- वह कौन-सी चीज़ है, जो जितना बढ़ती है उतना ही छोटी होती जाती है?
- ऐसा कौन-सा गेट है, जो कभी बंद नहीं होता?
- वह कौन-सी चीज़ है, जो जितनी तेज़ी से चलती है उतना ही पीछे छोड़ जाती है?
- वह कौन-सी चीज़ है, जो बिना हाथ-पैर के सबको पकड़ लेती है?
- ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो जितनी ज़्यादा होती है उतना ही कम दिखाई देता है?

-साभार गूगल
प्रेम कुमार सिंह
हिंदी विभाग

## संपादकीय मण्डल

| | | |
|---|---|---|
| मुख्य संपादक | : | पहल बजाज |
| सहायक संपादक | : | करन सोमानी |
| | : | प्रयाश खाखोलिया |
| आवरण पृष्ठ सज्जा | : | मशूनसिंह केशिंग |
| संकलनकर्ता | : | शांभवी चौहान |
| प्रभारी शिक्षक | : | डॉ. राजेश कुमार मिश्र |
| सहायक शिक्षक | : | श्रीमान प्रेम कुमार सिंह |
| | : | श्रीमान अनिल कुमार यादव |
| | : | श्रीमान अभिषेक थपलियाल |
| | : | श्रीमती मनदीप कौर |
| मार्ग-दर्शक | : | डॉ. अमित जुगरान |


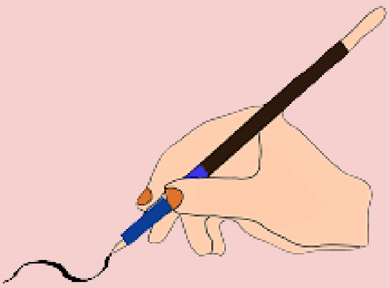

**निज भाषा उन्नति अहै , सब उन्नति को मूल।**
**बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।।**